9. मुस्लिम शासन का मोहयाल प्रतिरोध

मोहयाल इतिहास, हमारे मोहयाल दिग्गज पूर्वजों द्वारा, देश की सुरक्षा के लिए आक्रमकों के निरंतर प्रतिरोध की स्वर्ण गाथा है. इसी कारण विदेशी शासकों ने भारत के उस समय के इतिहास को सामने नहीं आने दिया.

सामरिक महत्व के दर्रा खैबर के दोनों ओर शासन करते हुए मोहयाल नरेशों ने लग भग दो सौ वर्ष तक देश को मुस्लिम शक्ति के उनमाद से बचा कर रखा. इस दौरान भारत, शान्ति और समृद्धि का उपभोग के सका. ब्राह्मण वंश के इस अनूठे योगदान को इतिहास में उजागर नहीं किया गया. इस वंश की चार पीढ़ियां – जयपाल, आनंदपाल, त्रिलोचनपाल और भीमपाल – ग़ज़नी के आक्रमकों का सतत प्रतिरोध करती रहीं. जब उनका अस्तित्व नहीं रहा तो किसी और हिन्दू राजा ने उस दृढ़ता से तुर्कों का मुकाबला नहीं किया. महमूद गज़नवी के राजवंश का 1023 से 1183 ई तक पंजाब पर कब्जा रहा. इस्लामी प्रभुत्व धीरे धीरे सारे देश पर छा गया.

पंजाब में वैद शासन विनष्ट होने के साथ ही एक युग का अंत हो गया. मोहयालों की सम्प्रभुता चली गई. मोहयाल अब शासक न हो कर देश की स्वतंत्रता के लिए विदेशी मुस्लिम शासकों का नितन्तर विरोध करते हुए जीवन की बलि देते रहे.

हिन्दु जनता के लिये यह लम्बा विदेशी शासन अति क्रूर तथा अत्याचारी था. शेष भारत के समान पंजाब में भी, जब भी हो सका, प्रतिरोध होता रहा और सबसे पहला प्रतिरोध मोहयालों ने किया. मुस्लिम इतिहासकारों ने महमूद के समय में "नवासा शाह" जो *"औलाद मालक हिन्द"* (हिन्द के एक राजा का बेटा) था, उसके बारे में लिखा है. माना जाता है कि वह जयपाल वैद का नवासा (बेटी का बेटा) था और उसका असली नाम सुखपाल था. वह महमूद की कैद में था. 1030 में महमूद का निधन हो गया तो सुखपाल किसी तरह वहां से निकल कर आ गया. 1043 ई में दिल्ली के तोमर राजा ने कुछ अन्य हिन्दू शासकों के साथ आकर हांसी, थानेसर और आगे नागरकोट के दुर्ग जीत लिए. नागरकोट के मंदिर में पुनः मूर्तियां स्थापित करके पूजा अर्चना होने लगी. हिन्दुओं का मनोबल उस समय बहुत ऊंचा था. सुखपाल ने पंजाब के पर्वतीय राजाओं से मिलकर 10,000 अश्वारोही और भारी संख्या में पैदल सैनिकों का दल बनाया. तीन हिन्दू राजाओं ने लाहौर पर आक्रमण कर दिया. इस समय महमूद का बेटा मौदूद, गज़नी का शासक था और पंजाब उसके आधीन था. अपने देश से दूर, इस संकट की गंभीरता को समझकर लाहौर के सब मुस्लिम अधिकारी संगठित हो गये और सात मॉस तक हिन्दू आक्रमकों का प्रतिरोध करते रहे. दिल्ली के या अन्य किसी हिन्दू राजा ने इसमें भाग नहीं लिया. इस लम्बे युद्ध में अंततः सुखपाल मारा गया और लाहौर से विदेशी सत्ता को हटा कर

वहां पुनः मोहयाल शासन स्थापित करने का उसका ध्येय विफल रहा. (फरिश्ता, ब्रिग्गज, अनुवाद, पृ. 71) 1186 ई तक पंजाब पर गज़नी का आधिपत्य रहा. इसके पश्चात दिल्ली भी क्रमशः गुलाम, ख़िलजी, तुग़लक़, सैय्यद और लोदी अफगान वंशों की सल्तनत बनी. 1526 ई में बाबर के मुग़ल वंश ने सत्ता छीन ली.

पंजाब में प्रायः अराजकता की स्थिति रहती थी और बाबर तो ठीक से शासन स्थापित ही नहीं कर पाया था. 1527 में, राजा मीन गुरदासपुर के समीप एक क्षेत्र पर शासन कर रहा था. दत्त मोहयाल जाति के एक दिग्गज योद्धा 'राय पुन दीवान' ने राजा मीन पर आक्रमण करके उसके क्षेत्र पर आधिपत्य जमा लिया. आजकल के गुरदासपुर और दीनानगर के बीच 'पनियाड़' नाम के स्थान पर मज़बूत दुर्ग बना कर अपनी राजधानी स्थापित की. बाबर ने अपने लाहौर के सूबेदार को राय पुन के विरुद्ध कार्रवाई करने का आदेश दिया पर अंततः उसको जागीरदार के रूप में रहने दिया गया.

हिन्दू प्रजा संकट में तो थी ही, स्त्रियों का सतीत्व और आबरू लूटे जाने का ख़तरा भी सदैव बना रहता था. गुरु नानक देव जी बाबर के समकालीन थे और उन्होंने मुग़ल-विजित क्षेत्रों में उसके अत्याचार का वर्णन करते हुए जनसंहार, लूटमार और महिलाओं की सरेआम बेइज़्ज़ती के बारे में इस प्रकार लिखा है. उनके "शब्द" जो गुरु ग्रन्थ साहिब में भी हैं, उनमें से कुछ उद्धृत् हैं :

(1) "कली काती राजे कसाई, धर्मु पंख करि उडरिया" ...

(2) "धन जौबन दुई बैरी होये, जिन राखे रंग लाये
दूताँ ने फरमांइयां, लै चल पत गंवाए."

दत्त बहुत समय तक शान्ति से शासन नहीं कर सके. लाहौर के मुस्लिम सूबेदार की बुरी नज़र गोबिंद राम मरवाहा की सुंदर बेटी पर पड़ गई और वह उसको अपनी "हरम" में लाना चाहता था. गोबिंद राम किसी प्रकार बेटी को लेकर पनियाड़ के हिन्दू राज्य में आया और उसके लिए शरण माँगी. स्थिति की गम्भीरता को जानते हुए भी राय पुन ने शरणागत की सुरक्षा का आश्वासन दिया और सूबेदार के दूतों को लड़की देने से मना कर दिया. लाहौर के सूबेदार ने बाबर से आज्ञा मांग कर पनियाड़ सैनिक भेजे पर हर बार दत्त अपने दुर्ग की सुरक्षा करने में सफल रहे. एक बार दत्त एक कपास के खेत में इकठे होकर कोई समारोह मना रहे थे जब एक भेदिये ने सूबेदार के सैनिकों को सूचित कर दिया जो भारी संख्या में उन पर टूट पड़े. इस युद्ध में सब निहत्थे दत्त शहीद हो गए. दुर्ग में जो थे उन की भी हत्या कर दी गई और स्त्रियां अग्नि में "सती" हो गईं. दो बच्चे – शाह सरूप और ढोलन – जम्मू के समीप अपने नाना के पास गए हुए थे केवल वह ही बचे. इस हत्याकाण्ड का दत्त जाति के लोगों पर इतना दुखद प्रभाव हुआ कि कोई दत्त पनियाड़ में पानी भी नहीं पीता था. क्योंकि यह घटना वीरवार के दिन हुई थी कई दत्त परिवार वीरवार के दिन कोई नया काम आरम्भ नहीं करते. ((टी. पी. रस्सल स्ट्रेसी: *दी हिस्ट्री आफ दी मोह्यालज़*, कवित पृष्ठ 73-74; जेहलम गज़ेटियर, 1905, पृष्ठ 121)

मोहयाल संख्या में बहुत कम थे और राज सत्ता भी उनके हाथ से निकल गयी थी. "नमक की पहाड़ी श्रृंखला" के पास रह रही खोखर जाति के लोग उनके सहयोगी और पड़ोसी थे. विदेशी राज के विरोध की अगुवाई अब उनके पास चली गयी. वह कई शताब्दियों तक हिन्दू ही रहे और अवसर मिलने पर कई क्षेत्रों पर अपना शासन जमाया. इस प्रतिरोध में मोहयाल भी उनके साथ रहे होंगे पर उपलब्ध इतिहास में उनके पदचिन्हों की पहचान कठिन है. **"कुछ बात है की हस्ती मिटती नहीं हमारी".** मोहयाल, देश के लिये सदैव बलिदान होते रहे. उन का वर्णन भी करेंगे.